



DR. NEELAKANTA RAMAKRISHNA MADHAVA MENON (POSTHUMOUS)

Revolutionizing Indian legal education has been the life's mission of this true Karma Yogi who achieved what was widely considered as an impossible task — establishing an institution of excellence in Indian legal education. Dr. Neelakanta Ramakrishna Madhava Menon single handedly brought fundamental changes in Indian Legal Education and established a model that is today sought to be emulated across our country and in several other countries.

2. Born on 4th May, 1935 in Trivandrum, Dr. Menon did his schooling in Trivandrum, received BL Degree from Kerala University (1955) and became an Advocate at the age of 20. He gave up practice and joined Aligarh Muslim University where he took his LLM and Ph. D with distinction in all subjects and awarded the Gold medal.

3. In 1965, Dr. Menon joined Delhi University and eventually became Professor and head of the Campus Law Center. Between 1973 and 1978 he went on deputation to the Pondicherry Government as Principal of Dr. Ambedkar Government Law College and returned to Delhi. Dr. Menon joined the Bar Council of India Trust to restructure legal education and assist in Professional development programmes. He went to Columbia Law School as a Fulbright Scholar and later taught law as a visiting Professor at Washington University Law School, St. Louis. He was the founder Vice Chancellor of two of the leading Law universities of India (National Law School of India University, Bangalore (1987-97) and National University of Juridical Sciences Kolkata (1999-2003). The Supreme Court of India asked Dr. Menon to assume charge as the first Director of the National Judicial Academy, Bhopal (2003-2006).

4. Dr. Menon headed several expert committees appointed by Government of India and served as member to several government organizations of India such as Law Commission of India, Legal Aid, Civil Services Reform Committee (U.P.S.E), Chairman National Policy on Criminal Justice, Equal opportunities Commission Centre for Development Studies. (TVM), Indian Statistical Institute, Kolkata and Member Commission on Centre State Relations, Govt. of India and many other committees. He wrote several Books and published over a hundred research articles and seminar papers on various topics. A book " Turning Point' written by a Law teacher containing the biographical notes on Dr. Menon and his contribution to legal education was released at the Law Teacher Award ceremony on Sept 2009. For the last 3 years he worked as honorary Director of Bar Council of Kerala M.K. Nambyar Academy for continuing Legal Education Kochi.

5. Dr. Menon was the recipient of numerous awards and honours. The International Bar Association honoured him with the "Living legend of Law Award." In 1994 followed by the Rotary Club of Bangalore conferring an Award of Vocational Excellence. The Bar Council of India presented a Plaque of Honor for his works on legal profession and several universities conferred honorary doctorate degrees on him. In 2003, Government of India honoured Dr. Menon with Padma Shri, the first such award to a law teacher in India.

6. Dr. Menon passed away on 7th May, 2019.





डॉ. नीलकण्ट रामकृष्ण माधव मेनोन (मरणोपरान्त)

भारतीय विधिक शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना इस सच्चे कर्मयोगी के जीवन का ध्येय रहा है, जिन्होंने वह हासिल किया, जिसे आमतौर पर एक असंभव कार्य माना जाता था। यह कार्य भारतीय विधिक शिक्षा में एक उत्कृष्ट संस्थान की स्थापना करना था। उन्होंने अकेले ही भारतीय विधिक शिक्षा में बुनियादी बदलाव किए और एक प्रतिमान स्थापित किया, जिसका अनुकरण आज हमारे देश और कई अन्य देशों में करने का प्रयास किया जाता है।

2. 4 मई, 1935 को त्रिवेंद्रम में जन्मे डॉ. मेनोन ने अपनी स्कूली पढ़ाई त्रिवेंद्रम में की तथा केरल विश्वविद्यालय (1955) से बीएल की उपाधि प्राप्त की और 20 साल की उम्र में अधिवक्ता बन गए। उन्होंने वकालत छोड़ दी और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में दाखिला लिया जहां से उन्होंने एलएलएम और सभी विषयों में विशेष योग्यता के साथ पीएचडी की उपाधि प्राप्त की और उन्हें स्वर्ण पदक से नवाजा गया।

3. डॉ. मेनोन ने वर्ष 1965 में, दिल्ली विश्वविद्यालय में कार्यग्रहण किया और अंततः वे प्रोफेसर एवं कैंपस लॉ सेंटर के अध्यक्ष बने। वर्ष 1973 और 1978 के बीच वे प्रतिनियुक्ति पर, डा. अंबेडकर सरकारी लॉ कॉलेज के प्रधानाचार्य के रूप में पांडिचेरी चले गए और फिर दिल्ली वापस आ गए। उन्होंने विधिक शिक्षा के पुनर्गठन और व्यावसायिक विकासगत कार्यक्रमों में सहायता करने हेतु बार काउंसिल ऑफ इंडिया ट्रस्ट में कार्य ग्रहण किया। वे एक फुलब्राइट–स्कॉलर के रूप में कोलंबिया लॉ स्कूल चले गए और बाद में उन्होंने वाशिंगटन विश्वविद्यालय लॉ स्कूल, सेंटलुइस में एक अतिथि प्रोफेसर के रूप में कानून की शिक्षा दी। वे भारत के दो अग्रणी विश्वविद्यालयों (नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी, बैंगलूरू (1987–97) और नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ ज्यूरिडिकल साइंसेज कोलकाता (1999–2003) के संस्थापक कुलपति बने। भारत के उच्चतम न्यायालय ने उनसे राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी, भोपाल (2003–2006) के प्रथम निदेशक के रूप में पदभार संभालने के लिए कहा था।

4. डॉ. मेनोन ने भारत सरकार द्वारा नियुक्त कई विशेषज्ञता प्राप्त समितियों की अध्यक्षता की और भारत के कई सरकारी संगठनों जैसे कि भारतीय विधि आयोग, विधिक सहायता, सिविल सेवा सुधार समिति (यूपीएसई) के सदस्य के रूप में अपनी सेवाएं दीं। वे नेशनल पॉलिसी ऑन क्रिमिनल जस्टिस, इक्वल अपारचुनिटी कमीशन सेंटर फॉर डेवलेपमेंट स्टडीज (टीवीएम), भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कलकत्ता के अध्यक्ष और भारत सरकार के केंद्र–राज्य संबंधों का आयोग, तथा कई अन्य समितियों के सदस्य रहे। उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं और एक सौ से अधिक शोध लेख प्रकाशित किए तथा विभिन्न विषयों पर अध्ययन गोष्ठी के पत्र प्रकाशित किए। डॉ. मेनोन और विधिक शिक्षा में उनके योगदान पर उनकी जीवन संबंधी टिप्पणियों को समाहित करते हुए एक विधि शिक्षक द्वारा लिखित पुस्तक ''टर्निंग प्वाइंट'' का सितम्बर 2009 को लॉ टीचर पुरस्कार समारोह के अवसर पर लोकार्पण किया गया। पिछले 3 वर्षों के दौरान कोच्चि में विधिक शिक्षा को जारी रखने के लिए उन्होंने बार काउंसिल ऑफ केरल एमके नाम्बियार अकादमी में मानद निदेशक के रूप में कार्य किया।

5. डॉ. मेनोन को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए। द इंटरनेशनल बार एसोसिएशन ने उन्हें ''लिविंग लीजेंड ऑफ लॉ अवार्ड'' से सम्मानित किया। इसके बाद, वर्ष 1994 में रोटरी क्लब ऑफ बैंगलोर ने वोकेशनल एक्सीलेंस का पुरस्कार प्रदान किया। द बार काउंसिल ऑफ इंडिया ने अनेक विधिक व्यवसाय संबंधी कार्यों के लिए उन्हें विधिक पेशे पर उनके कार्यों के लिए एक सम्मान पट्टिका भेंट की तथा कई विश्वविद्यालयों ने उन्हें मानद डॉक्टर की उपाधियों से विभूषित किया। वर्ष, 2003 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया, जो भारत में विधि शिक्षक को दिया गया इस प्रकार का पहला पुरस्कार था।

6. डॉ. मेनोन का 7 मई, 2019 को देहावसान हो गया ।